मानव संचेतना वादी व्यवहार शिक्षा के लिये
निम्न लिखित तथ्यों को ध्यान में रखना
आवश्यक है।

१- प्रत्येक मनुष्य चाहे बड़े हो या बच्चे इन सबमें जीवन संचेतना
समान है। (सहानुभूति संवेदनशीलता)

२- संचेतना का अभिव्यक्ति व संप्रेषणा कि निश्चित (परिष्कृत)
प्रणाली का रूप देना ही शिक्षा है।

३- शिक्षा कि संपूर्णता निपुणता कुशलता पाण्डित्य है।

४- निपुणता व कुशलता का परिष्कृती स्वयम् श्रम शक्ति है,
जिससे उत्पादन कार्य सिद्ध होता है।
पाण्डित्य ही जीवन मूल्य मानवमूल्य व्यवहार (समाज) मूल्यों का
पहिचान और मूल्यांकन क्षमता है।

५- व्यवहार में ही मूल्य चरित्र व नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान है

६- मनुष्य मनुष्य के साथ व्यवहार करने और मनुष्येतर प्रकृति के साथ
व्यवसाय करने के लिये बाध्य है।

७- व्यवहार में ही तन मन (संचेतना) धनात्मक अर्थ का सदुपयोग
व सुरक्षा स्वयम् शासन अनुशासन और स्वानुशासन को
सिद्ध करता है।

८- प्रबुद्ध संचेतना ही मानव ~~संचेतना है~~ समाज व्यवहार संचेतनाएँ

९- परिष्कृत संचेतना का संपूर्णता निपुणता कुशलता पांडित्य होने के
कारण प्रतिभा-व्यक्तित्व का, विज्ञान-विवेक का, ~~[illegible]~~ ~~संस्कृति~~
संस्कृति प्रभुसत्ता का सामरस्यता कि व्यवस्था है। फलतः संस्कृति
सभ्यता विधि व्यवस्था में असंदिग्धता, वैकल्पिक व्यवसाय व्यवहार
विचार व अनुभूति में और वैयक्तिक परिवार समाज राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय
जीवन में सामरस्यता सिद्ध होती है।